ISSN 2278-554 X Lamahi

लमही

अक्टूबर-दिसम्बर 2020

फणीश्वरनाथ रेणु पर केन्द्रित

₹ 180/-

रेणु : समग्र मानवीय दृष्टि —निर्मल वर्मा 96
समकालीन यथार्थवाद और रेणु का कथा–साहित्य —सुरेन्द्र चौधरी 102
वर्तमान सृजनशीलता का साक्ष्य : मैला आँचल —नित्यानन्द तिवारी 118

कितने चौराहे
चौराहों के पार —डॉ. सुलोचना दास 123

जुलूस
अनिश्चितताओं का 'जुलूस' —सुनील कुमार द्विवेदी 128

दीर्घतपा
कलंक मुक्ति का सर्व–दर्दहर ग्रंथ —डा. ह्रषिकेश कुमार सिंह 134

पल्टू बाबू रोड
स्वातंत्र्योत्तर राजनीति और नए राष्ट्र की विडम्बना —डा. धनंजय कुमार साव 139

कहानी
तीसरी कसम उर्फ़ मारे गए गुलफाम —फणीश्वरनाथ रेणु 144
रसप्रिया —फणीश्वरनाथ रेणु 157
लालपान की बेगम —फणीश्वरनाथ रेणु 163
एक आदिम रात्रि की महक —फणीश्वरनाथ रेणु 169
पहलवान की ढोलक —फणीश्वरनाथ रेणु 176
पंचलाईट / पंचलैट —फणीश्वरनाथ रेणु 180
संवदिया —फणीश्वरनाथ रेणु 182

मूल्यांकन

रेणु की कहानी 'तीसरी कसम उर्फ़ मारे गए गुलफ़ाम'
प्रेम की दुनिया से बेदख़ल —नीरज खरे 186
कम रोचक नहीं रहे रेणु और तीसरी कसम के किस्से —राजेन्द्र राजन 191
'तीसरी कसम' प्रेम में डूबा गहरा आलाप —विपिन शर्मा अनहद 195

रसप्रिया
एक अन्तर्पाठ —अरविन्द कुमार 199

लाल पान की बेगम
सामान्य जीवन के उत्सव और उल्लास की कहानी —डॉ. अल्पना सिंह 203

एक आदिम रात्रि की महक
भारतीय गांवों की मुकम्मल तस्वीर
प्रेमचंद और रेणु को मिलाकर बनती है —डॉ. गौरी त्रिपाठी 206

पहलवान की ढोलक
'पहलवान की ढोलक' की प्रासंगिकता —पंकज शर्मा 210

भारतीय गांवों की मुकम्मल तस्वीर प्रेमचंद और रेणु को मिलाकर बनती है

■ डॉ. गौरी त्रिपाठी

प्रेमचंद और रेणु की कहानियों के पार्श्वभूमि में जो गाँव आते हैं, वे लगभग एक जैसे ही हैं। बावजूद इसके कि इन दोनों रचनाकारों की समयावधि में तीन दशक का अंतराल है, लेकिन उस दौर के इन तीन दशकों में सामाजिक या आर्थिक तौर पर कोई विशेष बदलाव नहीं हुआ है। राजनीतिक सत्ता के केंद्र जरूर बदले लेकिन उसका असर गांवों में बहुत ही कम दिखता है।

आज के समय में परिवर्तन की गति जितनी तीव्र है और जिस तेजी से हमारा यथार्थ बदलने लगा है जीवन और समाज को लेकर, वैसी गतिमयता आज से छः–सात दशक पहले के उस दौर में नहीं थी। इसलिए यह मानने में कोई गुरेज नहीं कि प्रेमचंद और रेणु अपने –अपने ढंग से अपनी–अपनी शैली में औपनिवेशिक भारत के सीमांत पर बसे एक ही गांव की कहानी कहते हैं। इन गांवों में उतना ही अंतर है, जितना बनारस और बिहार में।

लेकिन प्रेमचंद की कहानी सुनते हुए आपको औपनिवेशिक भारत में किसानों के शोषण, उनकी बदहाली और टूटते–बिखरते गांव दिखाई देते हैं और जब आप रेणु को पढ़ते हैं तो उन्हीं चिर–परिचित अभावों के बीच चरित्रों के जीवन में उल्लास का मनोरम संगीत सा सुनाई देता है।

जीवन यथार्थ का वैसा करुण रुदन रेणु के यहां नही है जैसा प्रेमचंद की कहानियों में सहज ही उपलब्ध है। उन्ही गांवों से उठाए गए रेणु के चरित्र आकर्षण पैदा करते हैं। गुदगुदाते हैं। रेणु के यहां स्थानीयता का राग– रंग एक सम्मोहक और रोमानी वातावरण निर्मित करता है।

भारतीय गांवों की मुकम्मल तस्वीर बिना इन दोनों रचनाकारों को मिलाकर नही बनती है।

हजारों साल की अपनी विकास यात्रा में नाना दुख और पीड़ाओं के बीच मनुष्यता ने प्रेम और श्रृंगार के गीत भी खूब जी भर गाये हैं, जिसकी आत्मीय छाया ने प्रकृति को हरा– भरा कर दिया है। क्या यह नयी– नयी मिली आजादी के सपनों का उल्लास या नेहरू युग के सम्मोहन का असर भर है या एक समर्थ रचनाकार के अंतर्मन की बनावट ही प्रेमचंद से बिल्कुल भिन्न है।

मैं यहां कई सारी कहानियों का उल्लेख करना चाहती हूं, जो